संत मोनिका

ख्रीस्तीय परिवारों की आदर्श

संत मोनिका का संक्षिप्त जीवन-वृत्तांत

(त्यौहार 27 अगस्त)

उत्तरी अफ्रीका के महानगर कार्तेज से लगभग 100 कि.मी. दूर टागस्टे नुमीडिया नगर में, एक खीस्तीय परिवार में, सन् 322 में संत मोनिका का जन्म हुआ था।

बड़ी होने पर, मोनिका की शादी उसी नगर के पत्रीसियस नामक युवक से कर दी गई। वह युवक गैर-खीस्तीय एवं मूर्तिपूजक था। वह बड़ा क्रोधी और साधारणतः दुश्चरित्र प्रवृत्ति का भी था। मोनिका को उनके पति से बहुत दुःख सहना पड़ा। मोनिका की सास भी उन्हें हरदम सताती रहती थी परंतु वह सब कुछ चुपचाप सह लेती थी। वह ईश्वर से उनके मन-परिवर्तन के लिये निरंतर प्रार्थना करती और एक आदर्श जीवन बिताती थी। मोनिका की प्रार्थनाओं एवं व्यवहार का उन पर ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि दोनों ने बपतिस्मा ग्रहण कर आदर्श खीस्तीय जीवन को अपना लिया।

कुछ ही दिनों पश्चात् उसकी सास का देहांत हो गया। साल भर बाद ही, दो पुत्र और एक पुत्री को छोड़कर, पति भी चल बसा। मोनिका विधवा हो गई थी।

पति की मृत्यु के समय मोनिका के बड़े बेटे अगुस्टीन की उम्र सत्रह वर्ष की थी। मां की सारी आशायें इसी बड़े पुत्र पर टिकी थीं। परंतु एक दिन मोनिका को पता चला कि अगुस्टीन आवारागर्दी में लिप्त है और उसने मनाकी धर्म भी स्वीकार कर लिया है तो मोनिका का हृदय पीड़ा से तड़प उठा। वह कई रातें घुटनों के बल पड़ी बेटे के मन-परिवर्तन के लिये लगातार प्रार्थना करती थी। इस प्रकार नौ वर्ष बीत गये। मोनिका प्रत्येक पुरोहित से निवेदन करती,- ''कृपा कर मेरे बेटे के लिये प्रार्थना कीजिये।'' मोनिका का हृदय अंदर ही अंदर रोता था क्योंकि बेटे के मन-परिवर्तन का कोई भी लक्षण नजर नहीं आ रहा था। पुत्र की चिंता में उसकी हालत ऐसी हो गई थी कि कहीं वह पागल न हो जाय। निराशा में डूबी, दुःखी एवं थकी-हारी वह एक अनुभवी एवं ज्ञानी धर्माध्यक्ष के पास पहुंची। धर्माध्यक्ष ने

मोनिका को धीरज बंधाते हुए कहा,- ''मैं प्रार्थना करता हूं, यह कैसे हो सकता है कि जिस पुत्र के लिये इतने आंसू बहाये जा रहे हैं वह नष्ट हो जाए।'' इन शब्दों में मोनिका को आशा की एक किरण दिखाई पड़ी। अब इस दुःखी मां का कर्त्तव्य था, अपने पुत्र के लिये अथक प्रार्थना करना।

एक दिन मोनिका ने सुना कि अगुस्टीन रोम जा रहा है। वह किसी भी कीमत पर बेटे को रोम नहीं जाने देना चाहती थी पर वह अपनी मां को धोखा देकर रोम जाने में सफल हो गया। इधर मां संत सिप्रियन के गिरजे में रात भर प्रार्थना करती रही। दुःखों का भारी बोझ उठाये वह भी रोम के लिये रवाना हो गई। बेटे की तलाश में वह रोम की गलियों में भटकती रही। बाद में पता चला की अगुस्टीन रोम छोड़कर मिलान चला गया है, वह भी मिलान पहुंच गई। मिलान में अगुस्टीन का परिचय धर्माध्यक्ष अम्ब्रोस से हुआ और यह परिचय, मित्रता में बदल गया। धर्माध्यक्ष अम्ब्रोस का अगुस्टीन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसका ध्यान धर्मशास्त्रों पर गया और एक नवसिखुआ बन गया। इस तरह धर्माध्यक्ष का साथ और मां की प्रार्थना काम कर गई। एक दिन अगुस्टीन स्वयं मां के पास आया और बोला, ''मां, मैं अब मनाकी धर्म में विश्वास नहीं करता।'' पुत्र के मुख से यह शब्द सुनकर मोनिका की आंखों में खुशी के आंसू बहने लगे।

मोनिका का हृदय धर्माध्यक्ष अम्ब्रोस के प्रति अत्यंत आभारी था। अंत में उसकी चिर अभिलाषा पूर्ण हो गई। सन् 386 के अगस्त माह में अगुस्टीन ने अपने काथलिक होने की घोषणा की और 387 में पास्का पर्व के अवसर पर उसने बपतिस्मा ग्रहण किया। मोनिका ने अगुस्टीन के विवाह के लिये एक सुन्दर लड़की का भी चयन कर लिया था। परंतु उसने मां को बताया कि वह एक पुरोहित बनना चाहता है। यह सुनकर मोनिका गदगद हो उठी, जैसे कि सीप के साथ उसे मोती प्राप्त हो गया हो।

मृत्यु के पूर्व मां ने अपने पुत्र से कहा था, ''बेटा! जिस दिन को देखने के लिये मैं जी रही थी ईश्वर ने उससे भी महान दिन मुझे दिखा दिया है। तुम ख्रीस्त के लिये अपना जीवन समर्पित करने जा रहे हो, इससे बढ़कर आनंद की बात और क्या हो सकती है। मेरे जीवन का अब कोई

अर्थ नहीं रह गया है।'' इस समय तक मोनिका बिल्कुल टूट चुकी थी, पचपन वर्ष की उम्र में ही उसका अंत समय निकट आ गया था। अंतिम सांस लेने से पहले अपने बिलखते हुए छोटे पुत्र से उसने कहा, ''रो मत मेरे बेटे, खुशी-खुशी मुझे विदा कर।'' और वह सदा के लिये ईश्वर पिता की गोद में शांत हो गई। अगुस्टीन ने अपने ही हाथों मां की आंखों की पलकें बंद कर दी। मोनिका की मृत्यु मिलान में हुई थी अतः मां का वहीं अंतिम संस्कार संपन्न होने के बाद, अगुस्टीन वापस टागस्टे आ गया।

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''कन्फेशन (पापस्वीकार)'' में उन्होनें एक स्थान पर लिखा है, ''मैनें झूठ बोलकर मां को धोखा दिया, वह रात भर जागती रही और मेरे लिये रोती रही।'' दूसरी जगह उन्होंने लिखा है, ''हे प्रभु! मेरी मां वर्षों तक इसलिये रोती रही कि मैं तुझमें जीवन प्राप्त करूं। वह मेरे आंसुओं का मजाक न उड़ाये। परंतु यदि उसका हृदय तेरे प्रेम से परिपूर्ण हो तो तेरे सम्मुख मेरे पापों के लिये रोये।''

काथलिक कलीसिया 27 अगस्त को संत मोनिका का पर्व मनाती है। सदियों से भक्त-जन संत मोनिका को विवाहित महिलाओं की संरक्षिका और एक आदर्श मां मानते आ रहे हैं। अपनी पारिवारिक मुसीबतों में मातायें संत मोनिका से प्रार्थना करती हैं।

आईये! इस नौ दिवसीय प्रार्थना द्वारा हम अपनी पल्ली की सभी माताओं के लिये प्रार्थना करें- 'हे संत मोनिका! मां और पत्नि का कर्तव्य, ईमानदारी एवं प्रेम से निभाने के लिये, ईश्वर से हमारे लिये प्रार्थना कर।'

संत मोनिका की स्तुति विनती

प्रभु दया कर	- प्रभु दया कर
ख्रीस्त दया कर	- ख्रीस्त दया कर
प्रभु दया कर ख्रीस्त हमारी सुन पूरी कर	- ख्रीस्त हमारी विनती
स्वर्ग के पिता परमेश्वर	- हम पर दया कर
पुत्र परमेश्वर दुनिया के मुक्तिदाता	- ,,
पवित्र आत्मा परमेश्वर	- ,,
पवित्र तृत्व एक ही परमेश्वर	- ,,
संत मारिया	- हमारे लिये प्रार्थना कर
संत मोनिका	- ,,
संत धर्मी माता	- ,,
संत विश्वासी माता	- ,,
संत मोनिका दुःखवाहिनी माता	- ,,
संत मोनिका मन परिवर्तन के लिये प्रार्थनारत माता	- ,,
संत मोनिका ख्रीस्तीय आदर्श की माता	- ,,
संत मोनिका कर्त्तव्यनिष्ठ माता	- ,,
संत मोनिका मुसीबतों में दृढ़ माता	- ,,
संत मोनिका अविरल प्रार्थनारत माता	- ,,
संत मोनिका तपस्या करने वाली माता	- ,,
संत मोनिका धर्माध्यक्षों एवं पुरोहितों की आभारी माता	- ,,
संत मोनिका पुरोहितीय परामर्श की अभिलाषी माता	- ,,

संत मोनिका पुरोहितों के प्रति श्रद्धालु माता - हमारे लिये प्रार्थना कर
संत मोनिका पापियों के मन फिराव हेतु आंसू बहाने वाली माता - ''
संत मोनिका धीरज-धारिणी माता - ''
अभिलाषी माता - ''
संत मोनिका पुरोहितों के प्रति श्रद्धालु माता - ''
संत मोनिका धीरज-धारिणी माता - ''
संत मोनिका आशा रखने वाली माता - ''
संत मोनिका मातृत्व के प्रति कर्तव्य- निष्ठ माता - ''
संत मोनिका बेटे की अनुगामी माता - ''
संत मोनिका करबद्ध प्रार्थनारत माता - ''
संत मोनिका संत-जीवन की प्रेरणादायिनी माता - ''
संत मोनिका परिवार का मन-फिराव कराने वाली माता- ''
संत मोनिका कष्ट उठाने वाली माता - ''
संत मोनिका टूटे परिवारों का उज्जवल भविष्य - ''
संत मोनिका स्वर्गीय राह की सशक्त मध्यस्थ - ''
संत मोनिका भटके हुओं का सन्मार्ग - ''
संत मोनिका पारिवारिक जीवन का आदर्श - ''
संत मोनिका विश्वास का जीवंत उदाहरण - ''
संत मोनिका बुलाहट का अद्‌भुत प्रकाश - ''
संत मोनिका नम्रता का प्रतीक - ''
संत मोनिका क्षमा की दिव्य मूर्ति - ''
संत मोनिका आत्माओं की प्यारी - ''
संत मोनिका प्रलोभनों पर विजयिनी - ''
संत मोनिका ईमानदार और वफादार गृहिणी - हमारे लिये प्रार्थना कर

संत मोनिका धर्मपरायण और प्रभु विश्वासिनी - हमारे लिये प्रार्थना कर
संत मोनिका विधवाओं की संरक्षिका - ''
संत मोनिका विवाहित महिलाओं की संरक्षिका - ''
संत मोनिका विवाहित महिलाओं की सहायिका - ''
हे ईश्वर के मेमने तू संसार के पाप हर लेता है - प्रभु हमें क्षमा कर
हे ईश्वर के मेमने तू संसार के पा हर लेता है - प्रभु हमारी सुन
हे ईश्वर के मेमने तू संसार के पा हर लेता है - प्रभु हम पर दया कर

हम प्रार्थना करें

हे परमेश्वर! तू सभी संतों द्वारा महिमान्वित है, तथा उनकी प्रार्थनाओं से प्रसन्न होता है। हम दीनतापूर्वक तुझसे विनती करते हैं, अपने बच्चों पर दृष्टि कर एवं अपनी सेविका संत मोनिका द्वारा कृपायें प्रदान कर, हम पर और हमारे परिवार अपनी दया दृष्टि बनाये रख। हमें स्वर्ग के अनंत आनंद की ओर अग्रसर कर जहां तू युगानुयुग जीता और राज्य करता है, अमिन!

हे संत मोनिका

री. हे संत मोनिका प्रणाम
नाम तुम्हारा अति महान
आज कर लो हमारा ध्यान।

1. दुनिया में रही तू संत समान ।
   संकट में भी अडिग चट्टान।।
2. आंसू की धारा से किया त्राण।
   निज बेटे की बदल दी प्राण।।
3. क्षमा प्रेम की तू है वरदान।
   हमें भी दिला दो क्षमा-दान।।
4. दुनिया में रही जलज समान।
   प्रभु के लिये दी तू पुत्र महान।

हे संत मोनिका

री. हे संत मोनिका प्रणाम
तुझे प्रणाम, तुझे प्रणाम।।
1-3 शत् शत् बारम्बार तुझे प्रणाम 2

1. कितना प्यारा तेरा नाम।
   याद रखेगा सारा जहान।।
2. तेरा आदर्श कितना महान।
   तू ही है नारियों की शान।।
3. रंग-बिरंगे प्रेम सुमन।
   हम चढ़ाते तेरे चरण।।

मां हमारी है मां मोनिका

री. मां हमारी है संत मोनिका
माताओं का आदर्श तू बनी है
अनुकरण करने में हमें मदद दे हमें मदद दे।

1. संत मोनिका सुन ले हमारी प्रार्थना
   तू ही है मां महिला संघ की आशा
   रक्षा कर तू उसकी सदा उसकी सदा।
2. संत मोनिका जब भी आये कष्ट तुझे
   तूने प्रभू पर धीरज रख कर सहन किये
   और सुपथ ले पुत्र बने संत महान।
3. संत मोनिका कर तू विनती हमारे लिये
   हमारे घरबार बनें प्रभु के लिये
   प्रभु के खातिर ज्योति बने हम ज्योति बनें।

पहला दिन

मातायें पारिवारिक जीवन का आदर्श एवं विश्वास का ज्वलंत उदाहरण

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे प्यारे पिता! हम आपको धन्यवाद देते हैं। हमारे परिवार और हमारे कार्यों पर आशीष बरसाईये। आज हम आपको धन्यवाद देते हैं क्योंकि आपने मां मरिया को येसु की मां बनने का वरदान दिया। हे पवित्र मां! आपने अपनी दीनता के पुण्यफलों द्वारा अपने परिवार में, विश्वास, भरोसा और प्रेम का आदर्श बन गई। हम तुझे अपने परिवार की रानी मानते हैं। हम संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा यह विनती करते हैं कि हमारे पल्ली की सभी माताएँ भी पारिवारिक जीवन का आदर्श एवं विश्वास का ज्वलंत उदाहरण बन सकें। हम यह प्रार्थना करते है उन्हीं प्रभु येसु खीस्त के द्वारा। आमेन!

पाठ :- संत पेत्रुस का पहला पत्र : 3:1-7

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तर :- हे पिता, संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा हमारी प्रार्थना सुन।

1. माताएं परिवार को सजाने व संवारने वाली है, उनकी कार्य कुशलता स्वतः ही परिवार को सुन्दर बनाती हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि माताएँ अपने कुशल आचरण द्वारा परिवार में आदर्श जीवन प्रस्तुत कर सकें।
2. माताएं अपनी-अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर सकें एवं संतान और पति के प्रति सदैव सहानुभूति एवं प्रेम प्रकट करती रहें।
3. माताएं सुख और दुःख में, माता मरिया व संत मोनिका के आदर्श पर चल सकें।
4. माताएं प्रेम, दया और क्षमा का आदर्श बन सकें।
5. माताएं प्रकृति में व हर व्यक्ति में ईश्वर की उपस्थिति देख सकें।

6. माताएं अपने विश्वास द्वारा परिवार के सभी जनों को ईश्वर की ओर उन्मुख कर सकें।
7. ईश वचन व प्रार्थना संबंधी बातों में माताएं हमेशा परिवार की अगुवाई कर सकें।
8. माताएं पारिवारिक प्रार्थना को नियमित रूप से करने के लिये सबको प्रोत्साहित करती रहें।

प्रार्थना :-

हे कृपानिधान ईश्वर ! सभी परिवारों के प्रत्येक सदस्य में अपना प्रेम उंडेल दे ताकि हर माता अपने त्यागमय जीवन द्वारा पारिवारिक जीवन का ज्वलंत उदाहरण बन जायें। ख्रीस्त हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन!

संत मोनिका का गीत - पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती - पृष्ठ (7)

नोविना प्रार्थना :-

हे पावनतम त्रियेक ईश्वर! संपूर्ण संत-मंडली के शीर्ष, संत मोनिका के लिये तेरी प्रशंसा हो, तेरी आराधना हो, तुझे धन्यवाद! तूने संत मोनिंका को विपत्ति की भट्ठी में गलाकर ईश्वरीय पवित्रता के स्वर्ण को चमकाया है। उनकी अविरल आंसुओं की धाराओं पर अपनी करूण दृष्टि कर परिवार के पापों को दूर करने हेतु, कृपाओं की अद्भूत स्रोत खोल कर, मेल-मिलाप, दया-क्षमा एवं त्याग-तपस्या द्वारा पुरोहिताई एवं संत-जीवन की निर्मल धारा प्रवाहित कर गृहस्थ जीवन की महानता एवं पारिवारिक जीवन के उत्तम दायित्वों को उदारतापूर्वक निभाने की दिव्य प्रेरणा देकर तूने संत मोनिका की सतत प्रार्थनाओं द्वारा, प्रत्येक माता को वही दिव्य

आशीर्वाद प्राप्त हो ताकि सभी माताएं, परिवार के सभी सदस्यों के लिये मुक्ति के स्रोत बनकर उन्हें स्वर्ग पहुंचा सकें। हे परम दयालु परमेश्वर। ऐसी कृपा कर कि माताएं बच्चों के लिये बुलाहट के स्रोत तथा पतियों के लिये आशीष का कारण बन सकें ताकि विश्व का प्रत्येक परिवार, संत परिवार बन सके। यही प्रार्थना हम संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा तुझसे करते हैं। खीस्त हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन!

मां मरिया से धन्यवाद की प्रार्थना :-

हे निष्कलंक कुंवारी, स्वर्ग और पृथ्वी की महारानी, दूतों और संतों की ज्योतिर्मय आभा, नारी जगत की शोभा, समस्त मानव जाति की माता एवं हमारी माताओं का ज्वलंत उदाहरण। तेरे महान कार्यों के लिये, पवित्रता के लिये, मानवों के प्रति अद्भूत करूणा के लिये ईश्वर की स्तुति हो, ईश्वर की महिमा हो, ईश्वर को धन्यवाद!

हे पवित्र माता! तू पवित्र तृत्व का वह उद्यान है जहां मानव जाति का स्नेह पुष्प खिलता है। तू ही बालकों और अनाथों की रक्षिका है। तू ही युवकों को दुष्टात्मा के प्रलोभनों से बचाकर सत्य मार्ग पर चलाती है। तू ही युवतियों के कौमार्य का जीवित आदर्श है। तू ही पतिव्रताओं का आदर्श, विधवाओं का आसरा, वृद्धों की शरण, गरीबों का धन, रोगियों की औषध एवं पीड़ितों का सहारा है। संपूर्ण विश्व की माताओं, विशेष कर हमारे पल्ली की माताओं में तेरे प्रति सच्ची श्रद्धा-भक्ति डाल, ताकि वे माला-प्रार्थना करते हुए अपनी संतान एवं परिवार में तेरे प्रेम का अनुभव कराते हुए तेरी मध्यस्थता में तेरे आदर्शों पर चल सकें। हम सभी कृपादानों के लिये तुझे धन्यवाद देते हुए यही प्रार्थना करते हैं। उन्हीं हमारे प्रभु येसु खीस्त के द्वारा। आमेन!

आशीष-

दूसरा दिन

'मातायें और उनके परिवार के लिये प्रार्थना'

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे त्रिएक ईश्वर! तू ही स्वर्ग और पृथ्वी पर प्रत्येक परिवार का मूल आधार है। हम विशेष रूप से आज, माताओं और उनके परिवारों को तेरे समक्ष लाते हैं। अपनी आशीष व कृपा उन पर बरसा ताकि परिवार में मां को सम्मान एवं प्यार मिले। हम विशेष रूप से उन माताओं के लिये प्रार्थना करते हैं जो कुछ कारणों से अपनी संतान एवं पति द्वारा कई प्रकार से प्रताड़ित की जाती हैं, जिनकी आह सुनने वाला कोई नहीं है। हे पिता! तूने आदि से ही इन व्यक्तियों को चुना एवं परिवार में जोड़ा। उन्हें अपनी कृपायें प्रदान कर ताकि वे पुनः एक-दूसरे को स्वीकार कर प्रेम से संयुक्त हो कर जीवन जी सकें। हम यह प्रार्थना करते हैं, खीस्त हमारे प्रभु के द्वारा आमेन!

पाठ :- प्रवक्ता ग्रंथ- 3:1-18

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तरः- हे पिता, संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा हमारी प्रार्थना सुन।

1. अपने सदगुणों द्वारा, बच्चों को ईश्वरीय प्रेम दे सकें और बच्चों को सदाचारी बनाते हुए दूसरों की भलाई करना सिखायें।
2. अपनी ममता एवं आदर्श जीवन द्वारा, माताएं हमेशा अपनी संतानों को ईश्वरीय ज्ञान दे सकें, आज्ञाकारी बना सकें एवं माताओं व बच्चों का संबंध मधुर हो।
3. हम उन माताओं के लिये प्रार्थना करते हैं, जो अपनी संतानों द्वारा

प्रताड़ित की जाती हैं, अपनी संतानों द्वारा शारीरिक या मानसिक यातनायें सहती हैं, भला बुरा सुनती हैं। हे प्रभु, संत मोनिका के समान धैर्य, सहनशक्ति एवं विश्वास इन माताओं को प्रदान कर।

4. हे प्रभु! उन माताओं पर दया कर जो पतियों द्वारा तिरस्कृत एवं अन्य यातनायें सहती हैं।
5. जिस प्रकार येसु कलीसिया को प्यार करते हैं वैसे ही माता-पिता एक दूसरे को प्यार कर सकें।
6. संदेह एवं शंका जैसी बुराई माता-पिता के बीच से दूर हो और वे एक हृदय, एवं एक प्राण होकर परिवार को एकता के सूत्र में बांधे रखें।
7. माताएं अपने बच्चों एवं पति को आदर दे सकें और उनके लिये प्रेरणा स्रोत बन सकें।
8. माताएं अपने पति एवं संतानों के लिये क्षमा का मूर्त रूप बन सकें।

प्रार्थना -

हे दयानिधान परमेश्वर! सभी परिवारों के सभी सदस्यों में अपना प्रेम उंडेल दे ताकि प्रत्येक सदस्य यह अनुभव कर सके कि परिवार में मां का त्यागमय एवं प्रार्थनामय जीवन सभीं को प्रेम और सुख की अनुभूति कराता है। संतान एवं पति द्वारा प्रत्येक परिवार में माताएं प्रेम और आदर पायें। खीस्त हमारे प्रभुं के द्वारा। आमेन!

संत मोनिका का गीत - पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती - पृष्ठ (7)

आशीष

तीसरा दिन

'दुःखी और निराश माताओं के लिये प्रार्थना'

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे सांत्वनादाता पिता ईश्वर! आज हम उन माताओं को तेरे चरणों में समर्पित करते हैं जो कई कारणों से दुखित एवं निराश हैं। उनके जीवन की आशा टूट चुकी हैं, उन्हें जीवन अर्थहीन एवं नीरस लगता है। वे दुःख के घने बादलों के कारण, अपनी आंखें प्रभु की ओर उठाने में असमर्थ हैं। हे पिता! तू उन्हें अपने पुत्र येसु खीस्त की ओर आकर्षित कर, ताकि वे अपना दुःख उन्हें समर्पित कर सकें। खीस्त हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन!

पाठ :- सामुएल का पहला ग्रंथ- 1:9-18

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तर :- हे पिता, संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा हमारी प्रार्थना सुन।

1. हे पिता! उन पर अपनी दया-दृष्टि कर, जो कई वर्षों की लंबी बीमारी के कारण निराश पड़े हुए हैं।
2. हे पिता! उन माताओं के विश्वास, भरोसा एवं प्रेम को सुदृढ़ कर जिनके परिवार बिखर गये हैं।
3. हे पिता! उन माताओं को आशीष दें, जिनके पति पीने की बुरी आदतों में फंसकर उन्हें मारते पीटते हैं।
4. हे पिता! उन माताओं पर दयादृष्टि कर, जो अपनी संतानों द्वारा तिरस्कृत हैं एवं घर से निष्कासित कर दिये गये हैं।
5. माताएं अपने दुःख तकलीफों में संतो की भक्ति व विविध प्रकार के नौ दिवसीय प्रार्थनाओं की आदतों को जारी रखे।
6. माताएं अपने परिवार को पवित्र हृदय के प्रति समर्पित करें।

7. हे पिता ! उन माताओं पर कृपा कर, जो अपनी सास या बहुओं की नासमझी के कारण दुःखी हैं।
8. हे पिता ! उन्हे अपनी आशीष प्रदान कर जो अपनी कमजोरी के कारण दूसरों को क्षमा नहीं कर पा रहे हैं।
9. हे पिता ! उन माताओं को अपनी छत्र-छाया में रख, जो विश्वास के मार्ग से भटक गये हैं, वे विश्वास का दान प्राप्त करें।
10. हे पिता ! उन माताओं पर दया कर जो लाचार हैं।

प्रार्थना -

हे पिता ! तू सभी हृदयों की थाह लेता है। हम पर दया कर और हमारी विनय स्वीकार कर। विशेष कर दुःख एवं निराशा में डूबी माताओं का सहारा बन। उनका पथ-प्रदर्शन कर और उन्हें संभाल। यह प्रार्थना हम करते हैं। हमारे प्रभु खीस्त के द्वारा। आमेन !

संत मोनिका का गीत- पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती- पृष्ठ (7)

आशीष-

चौथा दिन

'बीमार एवं रोगग्रस्त माताओं के लिये प्रार्थना'

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे चंगाईदाता ईश्वर ! आज हम सभी बीमार एवं रोगों से पीड़ित माताओं को तेरे सम्मुख लाते है। अपने शक्तिशाली हाथों के स्पर्श द्वारा, उनकी बीमारी के कारणों को दूर कर दे। तेरे पुत्र प्रभु येसु के पवित्र रक्त द्वारा उन्हें रोगमुक्त कर दे ताकि वे तेरी महिमा एवं स्तुति कर सकें। हम यह प्रार्थना करते हैं। प्रभु येसु खीस्त के द्वारा। आमेन !

पाठ :- लूकस. 8:43-48

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तरः- 'संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा, हे पिता उन्हें चंगाई प्रदान कर।'

1. उन माताओं को जो रोगग्रस्त हैं, उनका उचित चिकित्सा मिल सके एवं ईश्वर उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करें।
2. पति व बच्चे, रोगी माताओं के प्रति सहनशील एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करें एवं विशेष प्रेम दिखा सकें।
3. रोगी माताओं को संत मोनिका जैसे धैर्यशील बनने की कृपा एवं कष्टों का सामना करने का साहस मिल सके।
4. सभी बुखार, मलेरिया, सिर दर्द से पीड़ित माताओं के लिए हम प्रार्थना करते हैं।
5. सभी प्रकार के कैंसर रोग से पीड़ित माताओं के लिये हम प्रार्थना करते हैं।

6. हृदय रोग से पीड़ित माताओं के लिए हम प्रार्थना करते हैं।
7. गुर्दे की बीमारी से पीड़ित माताओं के लिये हम प्रार्थना करते हैं।
8. जिन माताओं के पैरों, हाथों, जोड़ों एवं कमर दर्द की पीड़ा रहती है हम उनके लिये प्रार्थना करें।
9. आंख, कान, दांत, गला एवं नाक से संबंधित अन्य दर्द और रोगों से पीड़ित माताओं के लिये हम प्रार्थना करते हैं।
10. जो माताएं मानसिक रोग से पीड़ित है हम उनके लिये प्रार्थना करे।
11. यकृत, पित्ताशय, प्लीहा के रोग से ग्रसित माताओं के लिये हम प्रार्थना करें।
12. जो मधुमेह, बवासीर, गर्भाशय एवं छाती की बीमारी से पीड़ित हैं, उन सभी माताओं के लिये हम प्रार्थना करते है।
13. सांस की बीमारी, दमा, टी.बी. से पीड़ित माताओं के लिये हम प्रार्थना करते हैं।
14. दाद-खुजली व अन्य चर्म-रोगों से पीड़ित माताओं के लिये हम प्रार्थना करते हैं।
15. नस एवं हड्डियों की बीमारी से पीड़ित माताओं के लिये हम प्रार्थना करते हैं।
16. रक्तचाप के रोगों से पीड़ित माताओं के लिये हम प्रार्थना करते हैं।
17. उन सभी बीमार एवं पीड़ित माताओं को जिन्हें हम भूल गये हैं, उनके लिये प्रार्थना करते हैं।

प्रार्थना :

हे पिता ! तू सर्वशक्तिमान है ! तेरे लिये कुछ भी असंभव नहीं है। इसी विश्वास से हम हमारी बीमार, रोगी माताओं को तेरी चंगाई हेतु लाये हैं। हे पिता ! प्रभु येसु के पवित्रतम, मूल्यवान एवं शक्तिशाली रक्त के द्वारा सभों के पाप मिटा दे और मन, आत्मा एवं शरीर को चंगा कर दे। हम विश्वास के साथ यह प्रार्थना तुझे चढ़ाते हैं। तू जो युगानुयुग जीता रहता और राज्य करता है। आमेन !

संत मोनिका का गीत - पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती- पृष्ठ (7)

आशीष-

पांचवा दिन

'विधवा माताओं के लिये प्रार्थना'

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे अति दयालु पिता परमेश्वर! आज हम विशेष रूप से उन माताओं को, तेरे चरणों में लाते हैं, जो विधवा हैं। तूने कहा है, मैं तुम्हारे लिये अपनी निर्धारित योजनायें जानता हूं, तुम्हारे हित की योजनायें, अहित की नहीं। हम विश्वास करते हैं कि तेरी निर्धारित योजना के अनुसार तूने यह परिस्थिति प्रदान की है। जिस प्रकार संत मोनिका ईश्वर के प्रति विश्वस्त रही उसी प्रकार ये माताएं विश्वास में अटल बनी रहें। हमारी विधवा माताओं को यही कृपा दे कि वे अपना जीवन तेरे विश्वास, उपासना एवं आराधना में बिता सकें। खीस्त हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन!

पाठ :- 1 तिमथी. 5:3-16

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तर :- 'हे संत मोनिका ईश्वर से हमारे लिये प्रार्थना कर।'

1. जो माताएं पति की मृत्यु के कारण, अकेली ही परिवार का सारा भार संभाल रही हैं, ईश्वर उनको अपनी शक्ति प्रदान करे।
2. विधवा माताएं जो अपने को बेसहारा समझती हैं, ईश्वर उनका सहारा बने।
3. विधवा माताएं अपने बच्चों को माता और पिता का प्यार दे सकें।
4. विधवा माताओं को अपनी संतान द्वारा पूर्ण सेवा व प्यार मिले।

5. विधवा माताओं को अपने परिवार जनों से सहयोग मिले।
6. विधवा माताएं पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा, ईश्वर पर भरोसा रखते हुए परिवार की देखभाल कर सकें।
7. विधवा माताओं को प्रज्ञा और ज्ञान मिले ताकि वे हर परिस्थिति में धैर्य के साथ आगे बढ़ सकें।
8. विधवा माताओं को प्रभु ईश्वर विशेष आशीष प्रदान करें ताकि वे अपने परिश्रम द्वारा सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकें।
9. विधवा माताएं संत मोनिका के त्याग एवं आदर्श प्रार्थनामय जीवन के द्वारा, परिवार के प्रत्येक सदस्य को ईश्वर के समीप ला सकें।
10. ईश्वर विधवा माताओं को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्रदान करें।

प्रार्थना :

हे हमारे पालक पिता ! हम तुझे धन्यवाद देते हैं और तेरी महिमा गाते हैं क्योंकि तूने हमारी प्रार्थना सुन ली है। हमें ऐसी कृपा प्रदान कर कि हम हर परिस्थिति में, दु :ख और सुख में तेरी प्रशंसा के गीत गाते रहें एवं सब कुछ के लिये धन्यवाद का भजन चढ़ाते रहें। खीस्त हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन !

संत मोनिका का गीत - पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती- पृष्ठ (7)

आशीष-

छठवां दिन

'गर्भवती एवं निःसंतान माताओं के लिये प्रार्थना'

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे सृष्टिकर्ता परमेश्वर! तू प्रेम से हर प्राणी को जीवन प्रदान करता है। अपनी पवित्र इच्छानुसार, तू प्रत्येक मानव को, सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी का रूप देते हुए, अपने स्वरूप में गढ़ता है। यह सुंदर एवं अनुपम कार्य, तू एक माता के गर्भ में, मानव दृष्टि से दूर, एकांत में करता है। प्रत्येक माता की सहभागिता से, तू यह सृष्टि कार्य करता है। जब मैं अदृश्य में बन रहा था, जब मैं गर्भ के अंधकार में गढ़ा जा रहा था, तो तूने मेरी हड्डियों को बढ़ते देखा (स्तोत्र ग्रंथ 139:15,16)। हम सभी गर्भवती माताओं के लिये प्रार्थना करते हैं कि, तेरे इस अद्‌भुत कार्य का उन्हें ज्ञान मिले और वे इस अवस्था में, अपना मन एवं हृदय शुद्ध रखकर, माता मरियम की भांति, आपकी प्रशंसा में अपना समय बिता सकें। हम यह प्रार्थना करते हैं, हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन!

पाठ :- संत लूकस 1:5-7, 24-28, 56-58

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तरः-

'संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा, हे पिता! हमारी प्रार्थना सुन।'

1. हे प्रभु! उन माताओं को मानसिक, शारीरिक एवं आत्मिक चोटों से सुरक्षित रख, जिन्होंने गर्भधारण कर, तेरे सृष्टि-कार्य को आगे बढ़ाने

का साहसिक कदम बढ़ाया है।

2. हे प्रभु! उन माताओं को गर्भावस्था की, इस विस्मयकारी कार्य का बोध करा, जो इसे तुच्छ समझते हैं, और उतना महत्व न देकर, कई प्रकार के कड़ुवे एवं बुरे अवधारणाओं में घिरे रहते हैं, जिनका गहरा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है।
3. हे प्रभु! उन माताओं की ओर ध्यान दे, जिन्हें गर्भावस्था में अत्याधिक कार्य करना पड़ता है, और उचित आहार नहीं मिल पाता है।
4. हे प्रभु! उन माताओं पर अपनी दयादृष्टि फेर, जो गर्भपात जैसी हत्या का पाप करते और कराते हैं एवं उन्हें इस महापाप का बोध प्रदान कर।
5. हे प्रभु! उन माताओं पर दया कर, जिन्हें गर्भावस्था में प्रताड़ित किया जाता है या किसी रोग की शिकार बन गई हैं, और कई प्रकार के औषधियों के सेवन के कारण व्याकुल रहती हैं।
6. हे प्रभु! उन माताओं को सुरक्षित रख, जिन्हें गर्भावस्था में यात्रा एवं अन्य आकस्मिक कार्य करने पड़ते हैं।
7. हे प्रभु! उन माताओं को आशीष प्रदान कर, जिन्हें इस अवस्था में, अपने पति या प्रियजनों से दूर रहना पड़ता है। उन माताओं को तू सांत्वना प्रदान कर जो अपने प्रियजनों के स्वर्गवासी हो जाने से, दुःखी हैं और रोती कलपती हैं।
8. हम प्रार्थना करें कि निःसंतान माताएं ईश्वर पर पूर्ण भरोसा रखें क्योंकि ईश्वर के लिये कुछ भी असंभव नहीं है। ईश्वर इन माताओं को संतान सुख प्रदान करे।
9. हम उन निःसंतान माताओं के लिये प्रार्थना करें जो निराश हैं, अपने को कोसते रहते हैं। जो पति एवं परिवारजनों द्वारा ठुकराये जाते हैं एवं जो बीमारी के कारण संतानहीन हैं। ईश्वर उन्हें सहनशील बनाये।

प्रार्थना :

हे सर्वज्ञानी ईश्वर पिता! हम सभी माताओं को, तेरे हाथों में समर्पित करते हैं, जो गर्भवती हैं, उन्हें कठिनाईयों में अपनी दाहिनी विजयी हाथों से संभाल, और एक मां की तरह, उन्हें दिलासा से भर दे ताकि वे अपनी कोख में बढ़ रहे शिशु का आदर सम्मान से, विकसित होने में साथ दें और एक पवित्र स्वस्थ बच्चे को इस संसार में जन्म दे सकें। गर्भवती माँ को सुरक्षित झझकी की कृपा प्राप्त हो हम यह कृपा मांगते हैं ख्रीस्त हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन!

संत मोनिका का गीत - पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती- पृष्ठ (7)

आशीष-

'वृद्ध, असहाय एवं स्वर्गवासी माताओं के लिये प्रार्थना'

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे करूणासागर पिता ईश्वर! आज हम उन माताओं को तेरे चरणों में समर्पित करते हैं, जो वृद्धावस्था के कारण क्षीण एवं लाचार हैं। उन माताओं की भी सुधि ले, जो असहाय एवं अकेलेपन से ग्रसित हैं। तेरे पुत्र प्रभु खीस्त ने अपनी मां को अकेले नहीं छोड़ा। अपने प्राण त्यागने के पूर्व उसने शिष्य योहन को, अपने स्थान पर पुत्र के रूप में, अपनी मां को सहारा दिया- भद्रे! यह आपका पुत्र है। और योहन से कहा- यह तुम्हारी माता है। हे पिता! वे माताएं जो बेसहारा हैं उन सभों को इसी प्रकार सहारा प्रदान कर। हम यह प्रार्थना करते हैं, खीस्त हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन!

पाठ :- मत्ती 25:31-40

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तरः- 'संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा, हे पिता! हमारी प्रार्थना सुन।'

1. हे दयालु पिता! हमारी वृद्ध माताओं पर दया कर, और जो मन एवं शरीर से दुर्बल हैं, उन्हें शक्ति प्रदान कर।
2. हे पालनहार पिता! उन वृद्ध और असहाय माताओं को, उनके प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुएं प्रदान कर, जिनको परिवार वालों एवं संबंधियों ने छोड़ दिया है।
3. हे दया के सागर! उन वृद्ध माताओं पर दया कर, जिनकी देख -रेख करने वाला कोई नहीं है। उनके सहारे एवं देखभाल के लिये, तू

उदार हृदयों को प्रेरणा दे।

4. हे पिता ! तू उन माताओं पर कृपा दृष्टि कर, जिन्होंने अपने जीवन काल में अत्यंत दुःख सहा है और अब तक, लोगों से मेल-मिलाप नहीं कर पाये हैं। हे पिता उन्हें कृपा दे कि वे अच्छा पापस्वीकार कर सकें।
5. हे पिता ! उन माताओं की आत्माओं को चिरशांति प्रदान कर, जो अचानक किसी दुर्घटना के फलस्वरूप, स्वर्गवासी हो चुकी हैं। उन्हें अनंत आनंद में प्रवेश होने दे।
6. हे प्रभु ! उन माताओं की सुधि ले जिनका विश्वास कमजोर था और वे मृत्यु के समय पश्चाताप नहीं कर सके। उन्हें तू शुद्ध कर और शीघ्र ही तेरे दर्शन योग्य बना दे।
7. हे पिता ! उन्हें चिरशांति प्रदान कर, जो माताएं कुछ कारणों से कई वर्षों तक पवित्र संस्कार से वंचित थीं। उन्हें तू क्षमा कर एवं उन्हें, अपनी उपस्थिति में आने की कृपा प्रदान कर।

प्रार्थना :

हे करूणामय पिता ! तेरी दया असीम है। हमारी इन प्रार्थनाओं पर ध्यान दे। वृद्धावस्था में लाचार और बेसहारा माताओं को सहारा प्रदान कर, उन्हें सुरक्षित रख। उनकी आध्यात्मिक, मानसिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर जिससे वें तेरी दया एवं करूणा का, इसी संसार में अनुभव कर सकें। उन सभी आत्माओं को तू स्वर्ग में प्रवेश पाने दे जिन्हें तू इस लोक से परलोक में बुला लिया है। उन्हें अनंत शांति प्रदान कर। खीस्त हमारे प्रभु के द्वारा ! आमेन !

संत मोनिका का गीत - पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती- पृष्ठ (7)

आशीष-

आठवां दिन

'माताए अपनी संतानों के लिये बुलाहट पहचानने में सहायक हों'

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे संपूर्ण पवित्रता के स्रोत पिता ईश्वर ! हम तेरे प्रिय पुत्र येसु के नाम से, सभी माताओं को तेरे सम्मुख लाते हैं। तू उन्हें पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा, प्रज्जवलित कर ताकि सभी माताएं, स्वयं पवित्र जीवन जीते हुए, अपनी संतानों को भी पवित्र जीवन जीने की बुलाहट को, पहचानने में सहायक बन सकें। हे ईश्वर ! अध्ययन करने वाले सभी पुत्र-पुत्रियों को, तू दिव्य प्रेरणा प्रदान कर ताकि वे बुलाहट में दृढ़ रहकर, मानव मुक्ति के पुण्य कार्य में सहभागी हो सकें। यह प्रार्थना हम करते हैं, हमारे प्रभु येसु के द्वारा। आमेन !

पाठ :- मक्काबियों का दूसरा ग्रंथ अध्याय 7 या मारकुस 10:13-16.

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तरः- 'संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा, माताएं अपनी संतानों को प्रेरित कर सकें ।'

1. संत मोनिका के जैसे ही माताएं, अपनी संतानों के लिये ईश्वरीय-बुलाहट की प्रेरणा-स्त्रोत बन सकें।
2. माताएं अपनी संतानों के बुलाहट के लिये, निरंतर प्रार्थना कर सकें।
3. माताएं अपनी संतानों में, कलीसिया के प्रति प्रेम जागृत कर सकें।

4. माताएं मध्यस्थता प्रार्थना द्वारा, अपने बच्चों को, कलीसिया तथा ईश्वर के प्रति त्याग एवं समर्पित जीवन जीने के लिये, प्रोत्साहन दे सकें।
5. माताओं के पवित्र जीवन से प्रेरित होकर, बच्चे धार्मिक कार्यों में रूचि रख सकें।
6. माताएं स्वार्थ एवं सांसारिक मोह में पड़कर, बच्चों को बुलाहट में बाधा न डालें।
7. माताएं बच्चों की क्षमता के अनुसार, उचित मार्गदर्शन एवं ज्ञान दे सकें एवं अपनी संतानों के मन परिवर्तन के लिये, प्रार्थना करती रहें।
8. माताएं प्रतिदिन संत मोनिका की तरह, अपनी संतानों के लिये, पश्चाताप के आंसू बहाते हुए प्रार्थना कर सकें।
9. माताएं अपनी संतानों को प्यार दे सकें एवं धैर्य के साथ, उनका लालन-पालन कर सकें।
10. माताएं अपनी संतानों को त्याग, प्रेम, नम्रता एवं खीस्तीय जीवन जीने की राह दिखा सकें।

प्रार्थना :

हे सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर! हमारी यह प्रार्थना स्वीकार कर और अपने बच्चों पर दया कर। हमारी संतानों को निःस्वार्थ मार्ग पर ले चल। उनके हृदयों में आत्माओं के प्रति प्रेम भर दे, ताकि वे प्रत्येक आत्मा को स्वर्ग पहुंचाने हेतु, पवित्र बुलाहट की कृपा प्राप्त कर सकें। हमारी माताएं इस महान प्रयोजन को पूरा करने में, बच्चों के लिये प्रेरणा-स्त्रोत बन सकें। हमारे प्रभु येसु खीस्त के द्वारा! आमेन!

संत मोनिका का गीत - पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती- पृष्ठ (7)

आशीष-

नौवां दिन

'पुरोहितों के लिये माताओं की प्रार्थना'

प्रारंभिक प्रार्थना :-

हे कृपाओं के अनंत स्त्रोत प्रभु परमेश्वर! तेरी स्तुति ही, तेरी आराधना हो, तेरी जय जयकार हो। संपूर्ण ब्रह्मांड में निवास करने वाले, विशेष कर जन-जन के मन-मंदिर में बसने वाले ईश्वर, तुझे सहस्त्रों बार नमन हो। तेरा पुत्र प्रभु येसु ख्रीस्त स्वयं महापुरोहित है, जिसने अपनी पवित्र पुरोहिताई में सहभागी होने के लिये, प्रेरितों एवं आज पर्यन्त कई पुरोहितों को, पवित्र बुलाहट की कृपा देकर, उन्हें कृपा के स्त्रोत के रूप में, संसार को प्रदान किया है। हम प्रार्थना करते हैं कि माताएं सदैव पुरोहितों के लिये मध्यस्थ-प्रार्थना कर सकें। हमारे प्रभु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन!

पाठ :- संत योहन 19:25-27

निवेदन प्रार्थना :-

प्रत्युत्तर:- 'संत मोनिका की मध्यस्थता द्वारा हे पिता, हमारी प्रार्थना सुन।'

1. माताएं पुरोहितों का आदर करें एवं उन्हें प्रेम की दृष्टि से देखें।
2. माताएं पुरोहितों के लिये प्रतिदिन प्रार्थना करें।
3. माताएं पुरोहितों के प्रति बच्चों में सम्मान की भावना जगायें।
4. माताएं अपने बच्चों को उनके कार्यों में, पुरोहितों से आशीष प्राप्त करने की इच्छा करना सिखलायें।
5. माता-पिता अपने बच्चों को, पुरोहितिक जीवन की पवित्रता एवं महानता के बारे समझा सकें।

6. माताएं अपने बच्चों को, महापुरोहित येसु के प्रति विश्वास में आगे बढ़ायें।
7. माताएं पुरोहितों की निंदा व आलोचना संबंधी बातों से सदैव दूर रहे ताकि उससे होने वाली हानि से बच सकें ।
8. माताएं अपने परिवार की ओर से समय-समय पर, पावन खीस्तयाग का आयोजन करें, जिससे परिवार, शैतानी छल-प्रपंचों से सुरक्षित रह सके।
9. पुरोहितों के कलीसियाई उद्देश्यों की पूर्ति हेतु, उन्हें दान एवं सहयोग देने की भावना को जागृत कर सकें।
10. हम अपने पल्ली पुरोहित के लिये प्रार्थना करें, कि वे पल्लीवासियों के लिये, ईश्वर की आशीष एवं कृपा प्राप्त करने हेतु, उत्तम माध्यम बन सकें।

प्रार्थना :

हे ईश्वर ! संपूर्ण पवित्रता के स्त्रोत, एवं प्रज्ञा के भंडार ! विश्व के सभी पुरोहितों की पवित्रता की तू रक्षा कर। परिवार बुलाहट की प्रथम वह फुलवारी हैं, जहां इस सुंदर जीवन की नींव डाली जाती है। हमारी माताओं को आशीष प्रदान कर, कि वे प्रतिदिन पुरोहितों की पवित्रता की रक्षा एवं विकास हेतु निवेदन कर सकें। उनके हृदयों में पुरोहितों के प्रति, सम्मान की भावना को बढ़ा, जिससे अनेक माताएं पुरोहितों को जन्म दे सकें, खीस्त हमारे प्रभु के द्वारा। आमेन !

संत मोनिका का गीत - पृष्ठ (10)

संत मोनिका के आदर में स्तुति विनती- पृष्ठ (7)

आशीष-

माताओं की समर्पण विनती

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर, मैं ..... (अपना नाम) अपने आपको त्रिएक ईश्वर के सामाने अपने संपूर्ण परिवार – पति, बच्चों, सास–ससुर, रिश्तेदार एवं पड़ोसीयों – के साथ संत मोनिका की मध्यस्थता से एवं मॉ मरियम की सहायता से समर्पित करती हूँ।

संत मोनिका के समान परिवार में दु:ख और कष्ट झेलने के लिए और परिवार के लिए निरंतर प्रार्थना करते रहने के लिए, अपनी तपस्या व त्याग द्वारा पूरे परिवार को, हे त्रिएक ईश्वर, तेरे समक्ष ला पाने के लिए मैं दृढ़–संकल्प करती हूँ। आस–पड़ोस के दु:ख झेलने वाले परिवार की मुक्ति के लिए भी मैं अपने दैनिक जीवन के हर एक छोटे–बड़े क्रूस को सहर्ष अपनाते हुए, पुत्र येसु के दृ:खभोग के साथ समर्पित करती हूँ।

हे पिता परमेश्वर, इस मेरे समर्पण को, अपनी मॉ मरियम की मध्यस्थता द्वारा तथा अपनी संरक्षिका संत मोनिका के साथ स्वीकार करने की कृपा कर। आमेन।